पृ प्र वि सं

रा पृ वि अ कें

ESSO

NCESS

गृह पत्रिका
2018

संरक्षक
डॉ. एन. पूर्णचन्द्र राव
राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र
अक्कुलम, तिरुवनन्तपुरम

संपादक मंडल

डॉ. एन. पूर्णचन्द्र राव
निदेशक - अध्यक्ष
डॉ. टी. एन. प्रकाश
वैज्ञानिक जी - सदस्य
डॉ चन्द्र प्रकाश दुबे
वैज्ञानिक बी - सदस्य
श्री. रजत कुमार शर्मा
वैज्ञानिक बी - सदस्य
सुश्री अलका गोंड
वैज्ञानिक बी - सदस्य
श्री. पी. सुदीप
मुख्य प्रबंधक - सदस्य
श्रीमती वी. एस. राजश्री
हिन्दी अनुवादक - सदस्य

टंकण कार्य
अखिला एस. मोहन
हिन्दी टंकक

संपादक
पी. सुदीप
मुख्य प्रबंधक

प्रकाशन
हिन्दी अनुभाग
राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
भारत सरकार
तिरुवनन्तपुरम 695011
फोनः 04712442213, 2511720,721
फैक्स 04712442280

रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकार के अपने हैं। कार्यालय से कोई भी संबंध नहीं हैं।

इस अंक में

क्रमांक	विषय	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	माननीय मंत्री महोदय का आगमन - एक रिपोर्ट		1
2.	सादर प्रणाम	रा पृ वि अ कें परिवार	3
3.	सारवृत्त	श्री.पी. सुदीप मुख्य प्रबंधक	5
4.	कार्यान्वयन - एक रिपोर्ट	श्री. कृष्णकुमार. एस राजभाषा कार्यान्वयन अधिकारी	7
5.	मेरा कार्यालय	श्रीमती दिव्या. पी. एस एम टी एस	9
6.	रक्षा बंधन	श्रीमती जी. एस. शान्ती परियोजना सहायक	11
7.	हिन्दीतर राज्यों में हिन्दी लेखन	श्रीमती आल्फ़ा ए.एल हिन्दी टंकक	13
8.	एक लड़की की ज़िन्दगी	श्रीमती श्रीदेवी. सी. एस परियोजना सहायक	15
9.	बून्द पानी की (कविता)	श्री. एन. मुरलीधरन नायर हिन्दी अनुवादक	16
10.	पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय		17
11	प्रशासनिक चार्ट		18
12	सेवा निवृत्तियाँ, नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ		19

संक्षिप्त रूप
Abbreviations

NCESS	National Centre for Earth Science Studies	रा पृ वि अ कें	राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र
MoEF	Ministry of Environment and Forest and Climate Change	प व ज प मं	पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
R & D	Research and Development	अनु : वि	अनुसंधान और विकास
MoES	Ministry of Earth Science Studies	पृ वि मं	पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
DOLIC	Departmental Official Language Implementation Committee	वि रा का स	विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति
TOLIC	Town Official Language Implementation Committee	न रा का स	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
VSSC	Vikram Sarabhai Space Centre	वि सा स्पे से	विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र

कैंपस

संपादकीय.....

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा किये गये राजभाषा निरीक्षण के दौरान हिन्दी पत्रिका जारी करने का विचार प्रस्तुत किया गया था। परन्तु, 2016 में कई वजहों से जारी नहीं कर सके। बाद में केवल राजभाषा के कार्य के लिए रा पृ वि अ कें में दो कर्मी नियुक्त हुए तो हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन का कार्य पुनः जागृत हुआ।

नये नियुक्त हिन्दी अनुवादक कर्मियों को प्रेरित कर के रचनायें एवं आलेखों का समूह एकत्र कर सके।

'**पृथ्वी**' रा पृ वि अ कें का यह पहला प्रयास है। अगले प्रकाशन में अधिक रचनाएँ जोडकर अत्यधिक आकर्षक बनाने के लिए यह प्रेरणास्रोत रहेगा।

रा पृ वि अ कें

पी सुदीप
मुख्य प्रबंधक

नए निदेशक का पद धारण

संरक्षक की ओर से....

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र सन् 2014 से केंद्र सरकार के अधीन आया। तब से हिन्दी की जानकारी प्राप्त पदधारियों के सहयोग एवं सहायता से राजभाषा के कार्यान्वयन में प्रयत्नशील हैं। दिसंबर 2016 से हिन्दी कर्मी नियुक्त किये गये तो हिन्दी के प्रगामी प्रयोग तथा राजभाषा संबंधी नियमों के अनुपालन में शीघ्रता आयी।

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में यह प्रस्ताव रखा गया कि रा पृ वि अ कें की ओर से एक हिन्दी पत्रिका प्रकाशित की जाय। पत्रिका का नाम 'पृथ्वी' रखा गया कि कार्यालय से संबंधित मूल कामकाज पृथ्वी के विभिन्न विषयों पर है।

रा पृ वि अकें में हिन्दी भाषी बहुत वैज्ञानिक एवं गैर वैज्ञानिक कर्मी कार्यरत हैं। मगर वे अपने अपने फील्ड कार्यों में मग्न होने के कारण इस बार पत्रिका के प्रकाशन में सक्रियता से भाग लेने में असमर्थ रहे। फिर भी हिन्दी अनुभाग इतने प्रयत्नशील रहे कि निर्णयानुसार पत्रिका तैयार कर सके।

'पृथ्वी' का यह प्रथम अंक केवल प्रेरणा स्रोत है कि आगामी वर्षों में अधिकाधिक आकर्षक एवं सशक्त रहेगी।

मेरी शुभकामनाएँ

रा पृ वि अ कें

डॉ. एन . पूर्णचन्द्र राव

माननीय मंत्री महोदय अभिभाषण देते हुए

एक दृश्य

माननीय संघ मंत्री डॉ. हर्षवर्धन का राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र में आगमन
तिरुवनन्तपुरम 2 जुलाई 2017

ता: 2 जुलाई 2017 को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पृथ्वी विज्ञान एवं पर्यावरण तथा वन एवं जलवायु परिवर्तन के माननीय संघ मंत्री महोदय राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र में अपराह्न पहुँचे थे। शुरूमें ही मंत्री महोदय ने संस्था के समस्त निष्पादन के बारे में निदेशक, ग्रूप प्रधान, और वरिष्ठ परामर्शदाता से सुदीर्घ चर्चा की। डॉ. पूर्णचन्द्र ऱाव, निदेशक, **रा पृ वि अ कें** द्वारा प्रदर्शित संस्था के अनुसंधान ः विकास संबंधी कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ और उपलब्धियों तथा **रा पृ वि अ कें** के वरिष्ठ परामर्शदाता श्री. जॉन मत्तायी द्वारा प्रस्तुत '**वर्षा-जल संग्रहण**' प्रस्तुतियों को उन्होंने ध्यान से सुना। रा पृ वि अ कें द्वारा पिछले वर्षों से की गयी गतिविधियों की मंत्री महोदय ने प्रशंसा की। 'वर्षा-जल संग्रहण' जो समकालीन संगत विषय होता है, इस के संबंध में उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि **रा पृ वि अ कें** विनिर्दिष्ट सुझाव प्रस्तुत करें जिससे ताज़ा जल प्राप्यता की समस्या से करोडों भारतीय समाधान पा सके। उन्होंने आग्रह किया कि देश वर्षा-जल संग्रहण एक आन्दोलन के रूप में शुरूकरें ताकि प्रकृति से जो भी जलप्राप्त हो उसे मानवता एवं पारिस्थितिक तंत्र की फायदा हेतु किसी भी रूप में संचित रखा जा सके। मंत्री महोदय ने रा पृ वि अ कें से यह आग्रह किया कि भारत के विभिन्न भूभाग के लिए लागू वर्षा जल संग्रहण संबंधी स्थान विनिर्देशित विस्तृत सुझाव थोडे ही हफ्ते में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को प्रस्तुत करें।

तदनन्तर, **रा पृ वि अ कें** के वर्षा जल संग्रहण संबंधित प्रयासों पर वृत्त चित्र तैयार करने वाले दल से लघु साक्षात्कार कर के मंत्री महोदय ने सभा कक्ष में संस्था के समूचे कर्मियों को संबोधित किया। **रा पृ वि अ कें** के निदेशक, डॉ एन. पूर्णचन्द्र ऱाव ने मंत्री महोदय का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में निदेशक ने यह आशा सूचित की कि पृथ्वी प्रणाली विज्ञान से संबंधित विश्व व्यापी समस्याओं के मूल वादक के रूप में विकसित होना **रा पृ वि अ कें** का दृष्टिकोण हैं।

डॉ हर्ष वर्धन ने अपने भाषण में टिप्पणी की कि संसार के अनेक देशों की तुलना में भारत में विज्ञान श्रेष्ठ है और उन्होंने यह भी सूचित किया कि देश के वैज्ञानिकों एवं विज्ञान को प्रोन्नत तथा प्रोत्साहित करने में माननीय प्रधानमंत्री जी बहुत उत्सुक होते हैं। डॉ हर्ष वर्धन ने विशेष रूप से बताया कि भारत की आम जनता जिन समस्याओं का सामना करती हैं उनको सुलझाने में विज्ञान कितना सहायक है। भारत में शुभारंभ किये नये वैज्ञानिक कार्यक्रमों और जिस प्रकार उनका अनुवीक्षण किया जा रहा है इनके बारे में भी उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए। **रा पृ वि अ कें** के युवा वैज्ञानिकों और विद्वानों से आग्रह किया कि वे अपनी कोठरी से

बाहर आयें और अपनी वैज्ञानिक कार्यकलाप की वृद्धि, उन्नति एवं सुधार करें। उन्होंने यह घोषणा की कि देश की युवा-शक्ति में संघ सरकार को पूरा भरोसा है और वैज्ञानिकों में देश आशा की दृष्टि रखता है। उन्होंने सूचित किया कि भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की परिवर्तनकारी दूरदर्शिता के कारण बुद्धिजीवियों के विदेश जाने के बदले यहाँ आने लगा है क्योंकि अच्छे विज्ञान करने के लिए अच्छे गुणत्व पारिस्थितिकी तंत्र और कार्यक्रम प्राप्त है। युवाओं से उन्होंने आग्रह व्यक्त किया कि नेमी कामकाज से खुद को बदलें और जनता की समस्याओं के प्रति सुपुर्द रहें। उन्होंने वांछित किया कि कार्य-दृष्टिकोण को पुनः परिभाषित करें ताकि आम जनता की सहायता हेतु नये-नये कार्यक्रमों का आविष्कार कर सकें। जैसे हमने पोलियो से देश को मुक्त किया। डॉ टी एन प्रकाश, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कृतज्ञता व्यक्त की।

रा पृ वि अ कें से प्रस्थान पूर्व, माननीय मंत्री महोदय ने **रा पृ वि अ कें** के विभिन्न प्रयोगशालाओं के दर्शन किए और उनके अनुसंधान : विकास बल से परिचित हुए। रा पृ वि अ कें द्वारा ताः 5-9 जुलाई 2017 को निश्चित 'मल-नल' संबंधित राष्ट्रीय कार्यशाला एवं फील्ड प्रशिक्षण के संदर्भ में आयोजित प्रदर्शिनी भी उन्होंने देखा।

सादर प्रणाम

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र परिवार

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र के संस्थापक
प्रो: सी. करुणाकरन 1917-1999

चेरुवारी करुणाकरन का जन्म 6 मई 1917 को केरल राज्य के कण्णूर जिले के तलशेरी में हुआ। उनकी शिक्षा चेन्नै में हुई और बाद में बनारस हिंदु विश्वविद्यालय से उन्होंने सन् 1938 में भूविज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि-प्राप्त की। उन्होंने उत्तर प्रदेश के खनिज सर्वेक्षण विभाग में भूवैज्ञानिक के रूप में अपना पेशा शुरूकिया। मद्रास अब चेन्नै के प्रसिडन्सी कॉलज में भूवैज्ञानिक के रूप में अपना पेशा शुरूकिया और बाद में वाल्टयर के आंध्र विश्वविद्यायल में नवारंभित भूविज्ञान विभाग के प्रभारी रहे। अपनी प्रेरणात्मक कक्षाओं से उन्होंने अपने विद्यार्थियों में शैक्षिक जोश जागृत करने वाले उत्कृष्ट अध्यापक की कीर्ति पायी।

सन् 1948 में प्रों करुणाकरन भारतीय भूविज्ञान सर्वेक्षण में एक अधिकारी नियुक्त किये गये। सन् 1968 में वे दक्षिणी क्षेत्र के प्रभारी उप महानिदेशक हुए और अप्रैल 3, 1974 को महा निदेशक, 1975 में अधिवर्षिता के बाद वे तेल और प्राकृतिक गैस आयोग के विशेष कार्य अधिकारी नियुक्त किये गये और केरल राज्य योजना बोर्ड के तकनीकी सदस्य भी बने। सन् 1978 में, उन्होंने पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र की संस्थापना की और प्रथम निदेशक रहे। वे जिन विभिन्न पदों में रहे उनमें शामिल हैं: सदस्य, शासी निकाय, वाडिया हिमालयन भू विज्ञान संस्थान उप अध्यक्ष, एस्केप अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय भू भौतिकी संघ, अध्यक्ष भारतीय प्रायद्वीपीय भू विज्ञान संस्थान और अध्यक्ष, भारतीय जियो साइन्स अकादमी। प्रो. सी करुणाकरन का मई 28, 1999 को चेन्नै में स्वर्गवास हुआ।

प्रो. करुणाकरन को अनेक उत्कृष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त हैं। सन् 1965 में उन्होंने ग्रेट निकोबार द्वीप के प्रथम संयुक्त वैज्ञानिक अभियान का नेतृत्व किया जो विश्वव्यापी ध्यान आकर्षित कर सका। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में यह सूचित किया था कि भारत की दक्षिणीतम बिन्दु कन्याकुमारी नहीं, बल्कि पिग्मालियोन बिन्दु याने वर्तमान इन्दिरा पॉइंट है। उन्होंने सिक्किम के जेमु ग्लैसियर में एक वैज्ञानिक अभियान का गठन किया, जहाँ भारत में सर्वप्रथम हिम का घनापन मापने का भूभौतिकी तरीखे का प्रयोग किया गया।

उन्होंने भारतीय अंटार्कटिका अभियान की कल्पना की और सूत्रण भी किया जो तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी को समर्पित किया गया था। व्यापक रुचियों के व्यक्ति प्रो. करुणाकरन के ऑरकिड विषयक ज्ञान

सर्वमान्यता प्राप्त था। वे विशेषज्ञ गोताखोर थे और कोचिन नेवल बेस के अपने आयुवर्ग के गोता लगाने के अभिलेख में स्थान प्राप्ती हैं। उन्होंने कोगिन ब्रौन स्मारक स्वर्णपदक, आन्ध्र विश्वविद्यायलय के स्वर्ण पदक एवं प्राध्यापकी और एक्सप्लोरेर्स क्लब की सदस्यता सहित अनेक पुरस्कार प्राप्त किये थे।

पृथ्वी विज्ञान के समूचे अनुशासनों को एक ही छत के नीचे लाने वाली एक बहु अनुशासनिक संस्था प्रो. करुणाकरन का सपना था। अपने सपने के बारे में उन्होंने विश्व के प्रमुख अनुसंधान केंद्रों के वैज्ञानिकों से विस्तृत चर्चा की थी। उनके दर्शन का परिणाम देश के प्रमुख संस्था के रूप में परिणत हुआ।

संस्थापक निदेशक प्रो. सी. करुणाकरन के सम्मान में पृ वि अ कें ने वृत्तिदान व्याख्यान की व्यवस्था की है। भारत सरकार, इसरो के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. के. कस्तूरीरंगन ने सर्वप्रथम व्याख्यान दिया था और उसी श्रृंखला के ताज़ा याने नौवाँ व्याख्यान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त सैद्धान्तिक भौतिकी वेज्ञानिक एवं अंतरिक्षी प्रो. पद्मनाभन ने प्रस्तुत किया।

सारवृत्त

पी. सुदीप
मुख्य प्रबंधक

सन् 1978 में केरल सरकार के अधीन संस्थापित पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र तारीख 01.01.2014 से भारत सरकार, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र बन गया। तब से हिन्दी जानने वाले कर्मियों की सहायता से **रा पृ वि अ कें** में संघ सरकार की राजभाषा नीति कार्यान्वित की जा रही है। ता: 14.09.2015 से 28.09.2015 तक भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों से हिन्दी पक्ष मनाया गया। हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को ध्यान में रखते हुए कार्यालय में आयोजित एक समारोह में हिन्दी पुस्तिकायें कर्मचारियों को वितरित की गयी। मगर हिन्दी कर्मी के अभाव में बहुत कठिनाइयाँ महसूस हुई।

शासी परिषद् से अनुमोदन प्राप्त होने पर ठेके के आधार पर अनुवादक और हिन्दी टंकक की नियुक्ति हुई और उन्होंने ता: 14.12.2016 को कार्यभार सम्भाला।

1. अब राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का सख्त कार्यान्वयन की वजह से सभी कार्यालय ज्ञापन, परिपत्र,निविदा सूचनाएं आदि केवल हिन्दी-अंग्रेज़ी में प्रस्तुत किये जा रहे हैं।
2. विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक सुनिश्चित है और लिये गये निर्णयों का कार्यान्वयन भी किया जा रहा है।
3. हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधित तिमाही रिपोर्ट निर्धारित समय पर भेजी जाती है और मंत्रालय से प्राप्त समीक्षा रिपोर्ट विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में चर्चा की जाती है।
4. हर तिमाही अधिकाधिक प्रतिभागिता से हिन्दी कार्यशाला आयोजित की जाती है।
5. सारे नामपट्ट, रबड मोहर, द्विभाषी तैयार किये जाते है।
6. हिन्दी शिक्षण योजना के अधीन रोस्टर भी तैयार किये गये हैं।
7. **रा पृ वि अ कें** का वेबसाइट हिन्दी में भी तैयार करके यह अनुदेश दिये गये हैं कि वेबसाइट हिन्दी में भी जारी करें।।
8. सारे कंप्यूटरों में यूनीकोड की व्यवस्था हेतु आदेश जारी है।
9. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में निश्चित रूप से भाग लिये जाते हैं।

10. वर्ष 2016 के दौरान हिन्दी पक्ष का आयोजन ता: 04.01.2017 से 18.01.2017 तक किया गया। विभिन्न प्रतियोगितायें आयोजित की गयीं और पुरस्कार भी वितरित किये गये।

11. मुख्य पुस्तकायल के साथ हिन्दी पुस्तकालयक की व्यवस्था भी की गयी।

12. जो कर्मचारी हिन्दी के प्रति रुचि रखते हैं, उनके लिए फरवरी 2017 से जुलाई 2017 तक हर बुधवार हिन्दी अनुवादक द्वारा हिन्दी कक्षा का आयोजन किया गया।

13. अब हिन्दी-भाषी कर्मियों के लिए मलयालयम कक्षा का आयोजन किया गया है।

14. वर्ष 2017 के दौरान हिन्दी पक्ष का आयोजन ता: 11.09.2017 से 22.09.2017 तक किया गया है।

15. रा पृ वि अ कें द्वारा 'पृथ्वी' नामक हिन्दी पत्रिका, हिन्दी पॉकेट डायरी और विभागीय शब्दावली तैयार की गयी है जिनका प्रकाशन ता: 22.09.2017 को निश्चित है।

यह उल्लेखनीय है कि संघ सरकार की राजभाषा नीति के उचित कार्यान्वयन हेतु हिन्दी अनुवादक और हिन्दी टंकक स्थायी और नियमित आधार पर अनिवार्य है। आवश्यक प्रस्ताव **रा पृ वि मं** को भेजे गये हैं।

हिन्दी पक्ष समारोह-2015

- राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र में हिन्दी पक्ष समारोह 14-28 सितंबर 2015 के दौरान मनाया गया।
- श्री ए.एन नन्दा, मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल, केरल परिमंडल ने कार्यक्रमों का उद्घाटन किया।
- समारोह में हिन्दी के प्रयोग संबंधित कार्यशाला का संचालन डॉ. एस. रामदुलारी, प्रधानाचार्य, सरकारी कॉलज, कार्यवट्टम एवं श्री. डी. कृष्णपणिक्कर, सेवानिवृत्त, उप निदेशक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार दोनों ने किया।
- विभिन्न प्रतियोगितायें जैसे मात्र एक मिनट बोली, हिन्दी अनुवाद, सुलेखन, वाचन और कविता पारायण, कर्मियों के बच्चों के लिए आयोजित की गयी।
- हिन्दी साहित्य क्षेत्र के प्रतिष्ठित महानुभावों द्वारा प्रतियोगिताओं का मूल्यांकन किया गया।
- भाषायी निपुणता की उन्नति हेतु कर्मियों के लिए हिन्दी पुस्तिका का वितरण किया गया।
- समापन समारोह से कार्यक्रमों का समापन हुआ।
- डॉ. अनिल भरद्वाज, निदेशक, अन्तरिक्ष भौतिकी प्रयोगशाला, विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर ने समापन समारोह की अध्यक्षता की।
- डॉ. अनिल भरद्वाज ने प्रतियोगिताओं में विजयियों को प्रमाणपत्र एवं पुरस्कार राशि वितरित किये।

कार्यान्वयन - रिपोर्ट

एस. कृष्णकुमार
राजभाषा कार्यान्वयन अधिकारी

पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र जब से राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र बना है, तब से मलयालम के स्थान पर राजभाषा हिन्दी की अनिवार्यता थी। अत: सन् 2014 से यहाँ धीरे-धीरे हिन्दी का आगमन हो चुका था। मूलत: वैज्ञानिक संस्था होने के कारण भारत के कोने-कोने से वैज्ञानिक बंधु यहाँ कार्यरत हैं, जिनमें हिन्दी की समझ यहां के मूल निवासी से अधिक है। प्रशासन स्कंध में भी हिन्दी से परिचित अनेक पदधारी हैं। अत: केंद्र सरकार के कार्यालय हो जाने पर राजभाषा हिन्दी का प्रयोग किये जाने में इतनी कठिनाई नहीं हुई।

निदेशक की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित की गयी हैं। बैठकों में विभिन्न विषयों पर चर्चा होती है और उनका कार्यान्वयन भी किया जाता है। नामपट्ट और मोहर द्विभाषी किये गये है। कार्यशाला या संगोष्ठियाँ आयोजित की जाती है और रिपोर्ट भी मुख्यालय को भेजी जाती है।

ये सब होते हुए भी राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम और राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी आदेशों/अनुदेशों से संबंधित समुचित जानकारी के अभाव में नियमित रूप से इनका कार्यान्वयन किया जाना कठिन रहा। केवल मात्र हिन्दी भाषा की जानकारी से राजभाषा नियमों का अनुपालन संभव नहीं है। इसी कारण से शुरूसे ही थोडी कुछ कठिनाई हुई। इसी कठिनाई के कारण हिन्दी कर्मी की आवश्यकता महसूस हुई। अत: 14 दिसंबर 2016 से ठेके पर हिन्दी अनुवादक और हिन्दी टंकक कार्यरत हैं। कार्यालय से प्राप्त संपूर्ण सहयोग से दोनों बहुत कुछ करने में समर्थ रहे।

तिमाही रिपोर्ट निर्धारित समय पर प्रेषित की जाती है। हर तिमाही **वि रा का स** की बैठक आयोजित की जाती है और कार्यवृत्त की प्रति सभी संबंधित को भेजी जाती है। कार्यशाला का आयोजन प्रति तिमाही किया जाता है जिस में कर्यालय के वैज्ञानिक, अधिकारी तथा निदेशक भी भाग लेते हैं।

विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि इच्छुक कर्मियों के हित में 2017 फरवरी से जुलाई 2017 तक हर बुधवार विशेष हिन्दी कक्षा चलायी जाती थी। कुल 17 सत्रों में 127 प्रतिभागियों ने भाग लिया। स्वराक्षर से लेकर हिन्दी में टिप्पण एवं पत्राचार तक पढाये गये। परिणामवश कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति जानकारी एवं जागृति को महसुस किया जा सका। संस्थापन, कार्मिक, लेखा, क्रय अनुभागों में हिन्दी के प्रयोग का शुभारंभ हो चुका है। सेवा पंजी में छोटी-छोटी टिप्पणियाँ आजकल हिन्दी में की जाती है।

दिसंबर 2016 से लेकर कार्यालय से धारा 3(3) के अधीन जितने ही कार्यालय ज्ञापन, आदेश, परिपत्र आदि जारी किये जाते हैं वे सब द्विभाषी मात्र हैं। इसी प्रकार हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर जहाँ तक दिया जाना है वे भी पूर्णत: हिन्दी में दिये जाते हैं। कार्यालय के समूचे रबड मोहर द्विभाषी हो चुकी है। प्रोत्साहन योजना भी कार्यान्वित है। **रा पृ वि अ कें** में आयोजित भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों से संबंधित सूचनायें, कार्यक्रम सूची आदि बिलकुल द्विभाषी जारी की जाती है। समूचे कंप्यूटरों में यूनीकोड की व्यवस्था भी जारी है। इसी प्रकार वेबसाइट भी द्विभाषी करने का आदेश जारी है। वर्ष 2016 के दौरान दिसंबर महीने में हिन्दी पक्ष मनाया गया। विभिन्न प्रतियोगितायें आयोजित की गयी और विजयी प्रतिभागियों को समापन समारोह में नकद पुरस्कार प्रदान किये गये। संस्था में इस प्रकार राजभाषा नीति का कार्यान्वयन धीरे-धीरे आगे बढता जा रहा है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में **रा पृ वि अ कें** की उपस्थिति सुनिश्चित है। पिछली बैठक में मुख्य प्रबंधक राजभाषा अधिकारी एवं हिन्दी अनुवादक तीनों ने भाग लिया।

वर्ष 2017-18 से संबंधित वार्षिक कार्यक्रम पूर्णत: कार्यान्वयन किये जाने का निर्णय लिया गया है। सितंबर 11 से सितंबर 22 तक हिन्दी पक्ष का आयोजन किया जा रहा है। हिन्दी दिवस के समारोह में पत्रिका, शब्दावली पुस्तिका, हिन्दी पॉकेट डायरी आदि के प्रकाशन किया जाने की आशा है।

मगर बहुत कुछ करना शेष है। वस्तुत: राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग पूर्णत: सुनिश्चित करने के लिए नियमित तथा स्थायी हिन्दी कर्मी अनिवार्य है। अत: **रा पृ वि अ कें** ने पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय को हिन्दी अनुवादक एवं हिन्दी टंकक के स्थायी पद के लिए प्रस्ताव भेजा है। आशा है कि निकट भविष्य में तिरुवनन्तपुरम **न रा का स** के पुरस्कृत कार्यालयों की श्रेणी में **रा पृ वि अ कें** का नाम भी सुवर्ण लिपियों में लिखा जायेगा।

मेरा कार्यालय

दिव्या पी. एस
एम टी एस

वर्तमान राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र केवल पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र था। तात्पर्य यह है कि राज्य सरकार के अधीन संस्थापित एक अनुसंधान संस्था था। सन् 2014 से केंद्र सरकार के अधीन शासित हो जाने पर नाम के सामने राष्ट्रीय भी जोड दिया गया। अत: भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अधीन कार्यरत नौ वैज्ञानिक एवं अनुसंधान संस्थाओं में एक है मेरा कार्यालय।

रा पृ वि अ कें में ता: 03.02.2009 को मेरी नियुक्ति हुई। वस्तुत: इस केंद्र के मुख्यत: दो भाग हैं यानी विज्ञान स्कंध एवं प्रशासन स्कंध। भू विज्ञान से संबंधित अनुसंधान, चर्चायें, संगोष्ठियाँ, क्षेत्र अध्ययन आदि सारी बातें विज्ञान स्कंध का काम है। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा प्राप्त छात्र-छात्रायें विभिन्न योजनाओं के अधीन शोध कार्य हेतु यहाँ आते हैं। कभी-कभी भिन्न-भिन्न विषयों पर संगोष्ठियाँ आयोजित की जाती हैं। जिन में ख्याती प्राप्त विशेषज्ञ लेख प्रस्तुत करते हैं।

विज्ञान स्कंध में कार्यरत वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, परियोजना, अध्येताओं एवं संस्था से संबंधित सारे प्रशासनिक विषयों के कार्य प्रशासनिक स्कंध पर निर्भर है। प्रशासनिक स्कंध के मुख्यत: वित्त, लेखा, संस्थापना, क्रय, भंडार, संपदा, जैसे विभिन्न अनुभाग होते हैं। इनके अलग-अलग अधिकारी होते हैं। प्रेषण, वाहन, हिन्दी विषयक मामले सामान्य प्रशासन के अधीन है। अनुभाग के प्रभारी उप प्रबंधक पदनामित है। सहायक प्रबंधक, उप प्रबंधक, संयुक्त प्रबंधक, प्रबंधक और मुख्य प्रबंधक जैसी पदनामों की श्रेणी है। जब अन्य कार्यालयों में लिपिक, निम्न श्रेणी लिपिक, उच्च श्रेणी लिपिक, प्रधान लिपिक, कार्यालय अधीक्षक, आशुलिपिक जैसे पदनामित कर्मी होते हैं यहाँ कनिष्ठ कार्यपालक, वरिष्ठ कार्यपालक जैसे पदनाम प्राप्त है। जैसे कुछ कार्यालयों में पी ए का मतलब व्यक्तिगत सहायक माना जाता है मगर मेरे कार्यालय में इसका मतलब परियोजना सहायक है।

यद्यपि केंद्र के दो स्तंभ यानी विज्ञान स्कंध एवं प्रशासन स्कंध हैं फिर भी केंद्र का पूरा नियंत्रन निदेशक के अधीन होता हैं। निदेशक महोदय के निर्णयों के आधार या अनुसार मुख्य प्रबंधक कार्य करते हैं।

रा पृ वि अ कें के समूचे कार्यकलाप शासी परिषद् पर निर्भर हैं। इस से संबंधित पूरी बातें मुझे मालूम नहीं। इतना तो जानती हूँ कि शासी परिषद् में मंत्रालय के उच्चस्तरीय अधिकारी गण भी सदस्य हैं और केंद्र से संबंधित नीति परक मामलों पर निर्णय लिये जाते हैं।

केंद्र सरकार के कार्यालय होने के कारण राजभाषा का कार्यान्वयन अनिवार्य है। पिछले कुछ महीनों से राजभाषा से संबंधित कार्य होते आ रहे हैं। पहले भी कुछ कार्य हो चुके हैं। मगर नियमित रूप से परिपत्र आदि हिन्दी-अंग्रेज़ी में जारी करना, तिमाही रिपोर्ट भेजना जैसी बातें अभी चालू है।

कहा जाता है कि पृथ्वी संबंधित वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यों में मेरा कार्यालय विश्व स्तर की संस्था हो जायेगी। इस प्रकार हो जाने पर मेरे जैसे कर्मचारियों का भविष्य और भी उज्ज्वल हो सकता है। मेरी शुभकामनायें!

रक्षाबंधन

जी.एस.शान्ति
परियोजना सहायक

रक्षाबंधन पौराणिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक भावना के धागे से बना एक ऐसा पवित्र बंधन जिसे जनमानस में रक्षाबंधन के नाम से सावन मास की पूर्णिमा को भारत में ही नहीं और कई देशों में बहुत उल्लास एवं धूम-धाम से मनाया जाता है।

यह एक ऐसा बंधन हैं जो अपना भाई अपनी बहन से जीवन भर निभाता हैं। भाई जीवन का सौभाग्य हैं वह सौभाग्य सभी को नहीं मिलता हैं, मिलने वालों को पता भी नहीं हैं कि क्या उसने पाया हैं।

रक्षाबंधन अर्थात रक्षा की कामना लिए ऐसा बंधन जो पुरातन काल से इस सृष्टी पर जीवित है। सम्पूर्ण भारत में बहन को रक्षा का वचन देता भाईयों का प्यार भरा उपहार है, रक्षाबंधन का त्योहार। एक ऐसा भाई जिसे देखते ही सब दुख भूलजाये जिसे देखते मन खुशी से भर जाये। किसी भी दुःख हो जब हमें लगेगा कि मेरा भाई जब साथ होता तो! एक भाई जो जीवन भर अपना धर्म निभाता हैं वह अपनी बहन का सब दुःख दूर करें।

पौराणिक कथा का अगर जिक्र करें तो, रक्षाबंधन से जुड़ा एक और रोचक प्रसंग बहुत महत्वपूर्ण है। एक सौ यज्ञ पूर्ण कर लेने पर दानवेन्द्र राजा बलि के मन में स्वर्ग के प्राप्ति की इच्छा बलवती हो गई तो सिंहासन डोलने लगा। इन्द्र आदि देवताओं ने भगवान विष्णु से रक्षा की प्रार्थना की। भगवान ने वामन अवतार लेकर ब्राह्मण का वेष धारण कर लिया और राजा बलि से भिक्षा मांगने पहुँच गए। उन्होंने बलि से तीन पग भूमि भिक्षा में मांग ली।बलि के गु शुक्रदेव ने ब्राह्मण रूप धारण किए हुए विष्णु को पहचान लिया और बलि को इस बारे में सावधान कर दिया किंतु दानवेन्द्र राजा बलि अपने वचन से न फिरे और तीन पग भूमि दान कर दी। वामन रूप में भगवान ने एक पग में स्वर्ग और दूसरे पग में पृथ्वी को नाप लिया। तीसरा पैर कहाँ रखें? बलि के सामने संकट उत्पन्न हो गया। यदि वह अपना वचन नहीं निभाता तो अधर्म होता। आखिरकार उसने अपना सिर भगवान के आगे कर दिया और कहा तीसरा पग आप मेरे सिर पर रख दीजिए। वामन भगवान ने वैसा ही किया। पैर रखते ही वह पाताल लोक में पहुँच गया। जब बलि पाताल में चला गया तब बलि ने अपनी भक्ति के बल से भगवान को रात-दिन अपने सामने रहने का वचन ले लिया और भगवान विष्णु को उनका द्वारपाल बनना पड़ा। भगवान के पाताल निवास से परेशान लक्ष्मी जी ने सोचा कि यदि स्वामी पाताल में द्वारपाल बन कर निवास करेंगे तो वैकुंठ लोक का क्या

होगा? इस समस्या के समाधान के लिए लक्ष्मी जी को नारद जी ने एक उपाय सुझाया। लक्ष्मी जी ने राजा बलि के पास जाकर उसे रक्षाबन्धन बांधकर अपना भाई बनाया और उपहार स्वरूप अपने पति भगवान विष्णु को अपने साथ ले आयीं। उस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि थी यथा रक्षा-बंधन मनाया जाने लगा।

बहन का प्यार किसी दुआ से कम नहीं होता, अक्सर रिश्ते दूरियां से फीके पड जाते हैं पर भाई बहन का प्यार कभी कम नहीं होता । जीवन का एक सत्य हैं कोई भी रिश्ता कितनी भी दूर होजाये मगर भाई बहन का रिश्ता हमेशा बेमिसाल रहेगा । एक भाई अपनी बहन को और बहन अपने भाई को माता पिता से ज़्यादा जानते हैं, एक दूसरे का मन और किसी से अच्छी तरह पहचान सकते हैं । एक दूसरे, कोई मुश्किल में होंगे तब दोनों का दिल पहचान लेते हैं ।

जब माँ किसी गलती के लिए भाई को पीटते हैं तब माँ से जाकर बहन कहती हैं 'माँ मत मारो भैया को, मुझे मारो! इतना प्यार किसी भी रिश्ते में नहीं होगा वो अटूट बंधन हैं जिसे कहना नहीं पड़ता कि भैया मुझे आपसे कितना प्यार हैं। मेरा भी एक प्यारा सा भैया हैं मुझे आपकी याद आती हैं , मैं भगवन से दुआ करती हूँ कि हमेशा मेरे भैया को बहुत खुश रखना। कुछ भी दुःख उन्हें नहीं देना। भाई बहन के रिश्ते के आगे और कोई रिश्ता नहीं जीवन में, इस प्यार को संभाल के रखना हैं, कुछ भी जीवन में मिलेगा पर सच्चा भाई बहन कभी भी नहीं मिलता।

मेरे जीवन में मुझे मिला एक अनमोल तोफा है मेरा भाई। मुझे हर जनम में आप ही मिले, ये मेरी दुआ हैं ! आप से अच्छा और सच्चा कोई भी नहीं, मैंने पिछले जनम में कोई पुण्य किये होंगे तभी जाकर भगवान ने आपको मुझे दिया।

एक अटूट बंधन रक्षाबंधन, सभी भाई बहन को मेरी तरफ़ से रक्षा बंधन की शुभकामनाएं ।

डॉ.एस. सुधर्मा, कैंपस निदेशक, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केंद्र तिरुवनन्तपुरम, प्रतियोगिताओं का निरीक्षण करती हुई।

बच्चों की प्रतियोगिताओं का दृश्य

प्रतियोगिताओं का एक दृश्य

हिन्दी पुस्तिका वितरण समारोह – एक दृश्य

निदेशक टी.एन प्रकाश हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए

प्रतिभागियों का एक दृश्य

श्री सोमदत्तन, स नि (रा भा), कार्यशाला का संचालन करते हुए

श्री सी एम यूसफ, उ प्र (प्रशासन), कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए

NATIONAL CENTRE FOR EARTH SCIENCE STUDIES, TVM
हिन्दी पुस्तकालय उद्घाटन
HINDI LIBRARY INAUGURATION
09.01.2017, 11.00 am
डॉ. टी.एन. प्रकाश, निदेशक
Dr. T.N. Prakash, Director
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार
MINISTRY OF EARTH SCIENCES, GOVT. OF INDIA

NATIONAL CENTRE FOR EARTH SCIENCE STUDIES
रा पृ वि अ कें प्रतिष्ठान दिवस भाषण
NCESS FOUNDATION DAY LECTURE
डॉ. एम. राजीवन, सचिव, पृ वि मं, भारत सरकार
Dr. M. RAJEEVAN, Secretary, MoES, Govt. of India
ON 20-01-2017, 11 AM

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र
NATIONAL CENTRE FOR EARTH SCIENCE STUDIES

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र
NATIONAL CENTRE FOR EARTH SCIENCE STUDIES

FOUNDATION DAY LECTURE

OSICON-17
NCSCM

OSICON-17
August 28-30, 2017
INCOIS
NCSCM

OSICON-2017
Exhibition Pavilion

India International
Science Festival
(IISF) 2017
Curtain Raiser
National Centre for Earth Science Studies

पश्चिमी घाटी में मल नल के कारण स्थलीय खलबली पर राष्ट्रीय कार्यशाला एवं फील्ड प्रशिक्षण
NATIONAL WORKSHOP AND FIELD TRAINING ON LAND DISTURBANCES
DUE TO SOIL PIPING IN THE WESTERN GHATS
उद्घाटनः श्री. ई. चन्द्रशेखरन
माननीय राजस्व मंत्री, केरल सरकार
Inauguration by Sri. E. Chandrasekharan
Hon. Minister for Revenue, Govt. of Kerala
July 5, 2017 Workshop, NCESS Thiruvananthapuram
July 6-9, 2017 Field Training, Cherupuzha, Kannur
आयोजित
राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केन्द्र
ORGANISED BY
National Centre for Earth Science Studies
Ministry of Earth Sciences, Govt. of India
सहायता
SUPPORTED BY

हिन्दीतर राज्यों में हिन्दी लेखन

आल्फ़ा ए.एल
हिन्दी टंकक

आज हिन्दी विश्वस्तर पर प्रतिष्ठित हो चुकी है। इसके विश्वस्ष के निर्माण में हिन्दीतर राज्यों - तमिल, आंध्र, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल आदि के लेखकों और विश्व के अनेक देशों मे बिखरे हुए हिन्दी प्रेमियों का योगदान स्मरणीय है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दीतर राज्यों में भी हिन्दी का प्रचार प्रसार बढा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले से ही दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार करने का प्रयत्न महात्मा गाँधी ने शुरूकिया। 1960 ई: के बाद दक्षिण के विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा की व्यवस्था शुरुहुई। इससे हिन्दी में दक्षिणी भाषाओं की मूल्यवान कृतियों के अनुवाद बढने लगे। तमिल भाषियों को उतना अधिक तात्पर्य नहीं है जितना अन्य राज्यवालों को हैं। इसलिए ही तमिल भाषियों का हिन्दी में मौलिक रचनायें बहुत कम है। लेकिन तमिल से हिन्दी में अनुवाद कार्य करनेवाले कुछ विद्वान हैं।

कर्नाटक में श्री वासुपुत्तन, डॉ हिरण्यमय जैसे कुछ अनुवादक हैं, जिन्होंने कन्नड से हिन्दी में अच्छे अनुवाद किये हैं। कन्नड़ भाषियों ने हिन्दी में कुछ मौलिक लेखन भी किया है। कन्नड़ के गिरीश कारनाड़ के नाटक हिन्दी में विशेष लोकप्रिय हुए हैं। श्री चन्द्रकान्त कुसन्नकर का महापुरुष नामक मौलिक नाटक विशेष लोकप्रिय हुआ है और कुछ अच्छे रेखाचित्र भी शामिल है।

आंध्र प्रदेश में तेलुगु भाषियों ने हिन्दी में उच्चस्तरीय मौलिक लेखन किया है। श्री आरिग पूडि ने उपन्यास-लेखन में विशेष ख्याति प्राप्त की है। अब तक आपके डेढ दर्जन उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने कुछ कहानियाँ भी लिखी हैं। इनके अलावा तेलुंगु से हिन्दी में अनेक लेखकों ने कहानी, नाटक, उपन्यास लिखने के साथ अनुवाद भी किया है। यह एक अविस्मरणीय बात है कि हिन्दीतर राज्यों से हिन्दी में मौलिक रचनायें प्राप्त होना।

केरल में हिन्दी का अच्छा वातावरण है। मलयालम भाषियों ने भी हिन्दी में मौलिक लेखन किया है। श्री चन्द्रशेखर नायर ने कहानियाँ और नाटक लिखे हैं। डॉ षेणाय की कहानियाँ विशेष लोकप्रिय हुई है। डॉ पी जी वासुदेव एक अच्छे कहानीकार हैं। उन्होंने महापुरुषों की जीवनियाँ भी लिखी हैं। इनके अलावा एन ई विश्वनाथ अय्यर और जे बाबू केरल से हिन्दी के मौलिक लेखक है। अय्यर जी का जुहू का ऊँट नामक लघु निबंध बहुत रोचक है। स्पष्ट रूप से कहें तो केरल से कुछ अधिक हिन्दी लेखक है।

मराठी भाषियों ने हिन्दी में प्राचीन काल से ही मौलिक लेखन किया है। आधुनिक काल में प्रभाकर माचवे और

गजानन माधव मुक्तिबोध के लेखन से सभी परिचित हैं। कुछ मराठी भाषी लेखिकाएँ भी हिन्दी में मौलिक साहित्य लिख रही हैं। इनमें मालती सिरसोकर और मालती बाई श्रीखंडे का योगदान उल्लेखनीय है। मराठी से हरिनारायण आपटे और विष्णु सखाराम खंडेलकर के उपन्यास तथा विजय तेंदुलकर के नाटकों का अनुवाद हो चुका है।

पंजाबी भाषियों की मौलिक देन सर्वाधिक है। आधुनिक काल में पंजाबी भाषी हिन्दी-लेखकों की संख्या इतनी अधिक है और वे हिन्दी के इतने अपने हो गये हैं कि हम यह सोच ही नहीं पाते कि वे मूलतः पंजाबी भाषी हैं। श्रद्धाराम फुल्लौरी से लेकर कृष्णा सोबती तक मौलिक लेखकों की एक अटूट परंपरा है। इस परंपरा में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, यशपाल, भीष्म साहनी जैसे प्रमुख रचनाकार हैं। हिन्दी के इतिहस ग्रंथों में इनको महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

स्पष्ट रूप से कहें तो हिन्दी भाषा का प्रचार अब भी बढती जा रही हैं। इसका प्रमाण है कि हिन्दीतर राज्यों से हिन्दी में मौलिक लेखकों की सजगता। केरल के लिये यह गर्व की बात है कि यहाँ से हिन्दी के मौलिक लेखक की संख्या समय-समय पर बढती जा रही है। फिर भी मराठी भाषियों में प्राचीन काल से ही हिन्दी मौलिक लेखकों की संख्या कुछ अधिक है। आशा करें कि हमारी छोटी केरल में भी, मराठी के हिन्दी मौलिक लेखकों के जैसे हिन्दी मौलिक लैखक की संख्या बढती जायेगी।

एक लड़की की ज़िन्दगी

श्रीदेवी सी. एस
परियोजना सहायक

एक लड़की ने जन्म लिया जिसे
करना होगा बहुत सारा काम
अच्छी बेटी होती है वो।
स्नेह भरे बहन होती है वो
अपने भाई-बहन के लिए
मुस्कुराकर सहेली बन जाती है वो।
आज्ञाकारी बहु बन जाती है वो।
अपने ससुराल में
दुःख बरदाश्त करने वाली
पत्नी भी बन जाती है।
बच्चों को जन्म देनेवाली
मॉ भी बन जाती है।
इतने सारे दायित्व को लेकर ही
वह अपने जीवन को जीती है
सलाम तो देना ही पडेगा
ईश्वर की इस अद्‌भुत सृष्टि को।

बूँद पानी की

एन. मुरलीधरन नायर
हिन्दी अनुवादक

झिर मिर झिर मिर
आयी,वर्षा की बून्दें
तरस रही थी पृथ्वी
विवश हताश प्यासी,

सूखी प्यासी धरती
बेहोश पडी सोती हताश
आँखें मूँद प्रार्थना रत मानव
पानी पानी पानी .....।

मानव ने गला तोडा सस्य का
मात्र मनुष्य ने मार डाला मनुष्यता
पुत्र हत्या करते पिता की, माता की
पिता लूट लेते अभिमान पुत्री का।

नदी नाले डूब गये पाखाने से
गहरी सागर भर गया कचडा से
जैसे मानव मन वैसे ही
विषमय रही दुनिया सर्वत्र।

छुरी मारें बूँद पानी पीने
सूखा मरें बिन पानी पिये
गर्जे बादल बिन पानी दिये
आँखें खोल मनुज सहे दिल से।

भारत सरकार पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय पृथ्वी प्रणाली विज्ञान संगठन पृथ्वी भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली 110003	Govt. of India Ministry of Earth Sciences Studies Earth System Science Organisation Prithvi Bhavan, Lodhi Road, New Delhi 110003
1. समुद्री सजीव संसाधन एवं पारिस्थितिकी केंद्र, ब्लॉक सी, केंद्रीय भवन, कोच्चि, 682037	Centre for Marine Living Resources and Ecology, Block C, Kendriya Bhavan, Kochi 682037 **(CMLR&E)**
2. भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली, 110003	India Meteorological Department, Mausam Bhavan, Lodhi Road110003 **(IMD)**
3. राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केंद्र, ए-50 औद्योगिक क्षेत्र, फेज 11, सेक्टर-62, नोएडा-201307	National Centre for Medium Range Weather Forecasting, A 50 Industrial Area, Phase II, Sector 62, Noida 201307 **(NCMRWF)**
4. राष्ट्रीय समुद्र प्रौद्योगिकी संस्थान, वेल्लाचेरी-ताम्बरम रोड, पल्लिकरणै, चेन्नाई 600100	National Institute of Ocean Technology, Vellacherry-Thambaram Road, Pallikkaranai, Chennai 600100 **(NIOT)**
5. राष्ट्रीय अंटार्कटिक एवं समुद्र अनुसंधान केंद्र, हेडलैंड साडा, वास्को द गामा, गोवा 403804	National Centre for Antarctic & Ocean Research, Headland Sada, Vasco da Gama, Goa- 403804 **(NCAOR)**
6. भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र, 'ओशन वैली' प्रगति नगर, निजाम पेट, हैदराबाद 500055	Indian National Centre for Ocean Information Science, Ocean Valley, Pragathy Nagar, Nijam Pet, Hyderabad 500055 **(INCOIS)**
7. भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान, होमी भाभा रोड, पाषाण, पुणे- 411008	Indian Institute of Tropical Meteorology, Homi Bhabha Road, Pashan, Pune 411008 **(IITM)**
8. परियोजना निदेशालय, एकीकृत तटीय समुद्री क्षेत्र प्रबंधन, एन आई ओ टी कैंपस, वेल्लाचेरी-ताम्बरम रोड, पल्लिकरणै, चेन्नाई 600100	Project Directorate, Integrated Coastal Marine Area Management, NIOT Campus, Vellacherry-Thambaram Road, Pallikkaranai, **(ICMAM)** Chennai 600100
9. राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र, आक्कुलम, तिरुवनन्तपुरम 695011	National Centre for Earth Science Studies, Akkulam, Thiruvananthapuram **(NCESS)**

संगठन चार्ट Organisation Chart

संगठन चार्ट

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
(पृ वि मं)

पृथ्वी प्रणाली विज्ञान संगठन
(पृ प्र वि सं)

शासी निकाय

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र
(रा पृ वि अ कें)

शासी परिषद्

अनुसंधान सलाहकार समिति

निदेशक

वित्त समिति

प्रशासन	प्रयोगशालायें	अनुसंधान ग्रूप
मुख्य प्रबंधक कार्मिक सामान्य प्रशासन वित्त लेखा क्रय भण्डार संपदा प्रशासन & अनुरक्षण	पालियोमैग्नटिसम पेट्रॉलजी एक्स आर एफ, एक्स आर डी एस ई एम-ई डी एस जियोफ्लूयिड अनुसंधान एन एफ जी आर ए सेडिमेन्टॉलजि पार्टिकल आकार अनलैसर एम ए पी ए एन केंद्रीय रासायनिक जी सी-एम एस केंद्रीय जियोमैटिक्स भूकंप वेधशाला, पीची	क्रस्टल प्रोससस (सी आर पी) कोस्टल प्रोससस (सी ओ पी) अट्मोस्फरिक प्रोससस(ए टी पी) जलविज्ञान प्रसंस्करएण ग्रूप (एच वाई पी)

केंद्रीय लोक सूचना अधिकारी (सी पी आई ओ)

परियोजनायें प्रशिक्षण प्रलेखन
तकनीकी एकक, वेब सूचना एकक प्रशिक्षण विस्तार, पुस्तकालय

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र
सेवा निवृत्तियाँ, नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ
01.04.2016-31.03.2017
सेवा निवृत्तियाँ

क्रमांक	नाम	पदनाम	तिथि
1	डॉ. संसुद्दीन. एम	वैज्ञानिक जी	31.05.2016
2	श्री. जॉन मत्तायी	वैज्ञानिक जी	31.05.2016
3	श्री. शंकर. जी	वैज्ञानिक जी	31.05.2016
4	श्री. जॉन पॉल. पी	वैज्ञानिक एफ	31.05.2016
5	श्री. मोहम्मद इस्मायिल. एम	वैज्ञानिक अधिकारी ग्रेड	31.07.2016
6	डॉ. अन्सम सेबास्ट्यन	वैज्ञानिक ई	31.10.2016
7	श्री. लूयीस विल्यम	एम टी एस	31.10.2016
8	श्री. राजु. डी	वैज्ञानिक अधिकारी ग्रेड	30.11.2016
9	श्री. परमेश्वरन नायर. एम	तकनीशियन	30.11.2016
10	श्री. बषऱ्द्दीन. टी. डी	समन्वय अधिकारी ग्रेड	30.11.2016
11	श्री. सुरेन्द्रन. के	समन्वयक ग्रेड 4	30.11.2016
12	श्रीमती प्रसन्ना. के	वरिष्ठ कार्यपालक	30.11.2016
13	श्री. उण्णी. एन	एम टी एस	30.11.2016

2. नियुक्तियाँ

क्रमांक	नाम	पदनाम	तिथि
1	डॉ. चन्द्र प्रकाश दुबे	वैज्ञानिक बी	27.05.2016
2	श्री. रमेश माडिप्पल्ली	वैज्ञानिक बी	16.06.2016
3	श्री. कालीराज. एस	वैज्ञानिक बी	20.06.2016
4	श्री. पद्मा ऱाव	वैज्ञानिक बी	24.06.2016
5	डॉ. निलंजना सोरकार	वैज्ञानिक बी	30.06.2016
6	डॉ. उण्णिकृष्णन. सी. के	वैज्ञानिक बी	18.07.2016
7	डॉ. कुमार बटूक जोषी	वैज्ञानिक बी	08.08.2016 अपराह्न
8	डॉ. के. श्रीलाष	वैज्ञानिक बी	22.08.2016
9	सुश्री. अल्का गोंड	वैज्ञानिक बी	31.08.2016

3. पदोन्नतियाँ

क्रमांक	नाम	पदोन्नत पद	तिथि
1	श्री. अजितकुमार. एम	वैज्ञानिक अधिकारी ग्रेड III	01.07.2016
2	श्रीमती इन्दु जनार्दन	वैज्ञानिक सहायक ग्रेड बी	01.07.2016
3	श्रीमती श्रीकुमारी केशवन	वैज्ञानिक ई	01.01.2017
4	श्रीमती स्मिता विजयन	कार्यपालक	01.01.2017
5	डॉ. एल. षीला नायर	वैज्ञानिक एफ	27.03.2017

स्वच्छता पखवाड़ा 2017
SWATCHHTA PAKHWADA 2017
16-30 जून 2017 / 16th-30th June 2017
Inauguration by
Dr. Shashi Tharoor
(Member of Parliament)
राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम
NATIONAL CENTRE FOR EARTH SCIENCE STUDIES, THIRUVANANTHAPURAM
ESSO
NCESS

स्वच्छता पखवाड़ा 2017
SWATCHHTA PAKHWADA 2017
16-30 जून 2017 / 16th-30th June 2017
Talk by
Dr. K. VASUKI IAS
(Executive Director, Suchitwa Mission, Govt. of Kerala)
On 'Freedom from Waste'
राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम
NATIONAL CENTRE FOR EARTH SCIENCE STUDIES, THIRUVANANTHAPURAM
NCESS